गॉधी का शिक्षा एवं सर्वोदय दर्शन

डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह

गांधी की दृष्टि में शिक्षा ही समाज के अन्तिम व्यक्ति के सर्वोदय का साधन हो सकता है। गांधी ने ऐसे समाज की परिकल्पना की जिसमें न तो कोई छोटा हो और न कोई बड़ा हो, जिसमें न कोई प्रथम हो और न कोई अन्तिम व्यक्ति हो। बल्कि हमारा समाज एक आदर्श समाज हो जो कि प्रेम, भाईचारा, समानता एवं सामाजिक न्याय पर आधारित हो, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़ने, फलने–फूलने के लिए समान अवसर प्राप्त हो। गांधी की दृष्टि में अशिक्षा समाज के चेहरे पर एक बदनुमा दाग है जिसे किसी भी कीमत पर मिटाना जरूरी है। शिक्षा से ही सामान्य जन का कल्याण हो सकता है, एक जागरूक समाज की स्थापना हो सकती है।